RAJYA SABHA

Monday, the 27th August, 2001/5 Bhadrapada, 1923 (Saka)

The House met at eleven of the Clock,

MR. CHAIRMAN in the Chair.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Preservation of Tribal Culture in Orissa

*481. SHRI MAN MOHAN SAMAL : Will the Minister of TRIBAL AFFAIRS be pleased to state :

(a) the various schemes being implemented by Government for the preservation of tribal culture in Orissa; and

(b) whether Government propose to set up an institute for achieving the said purpose ?

THE MINISTER OF TRIBAL AFFAIRS (SHRI JUAL ORAM) : (a) The Ministry of Tribal Affairs provides financial assistance under Centrally Sponsored Scheme to Government of Orissa on matching basis (50 : 50), as Grants-in-aid to Tribal Research and Training Institute, (TRI), Bhubaneshwar. One of the activities of TRI is preservation of Tribal Culture. The Institute is engaged in preparation of tribal monographs of different tribal communities and it has got a museum with rich collection of various tribal artefacts. Besides, Department of Culture, Government of India, administers a scheme whereunder financial assistance is provided to voluntary organizations and individuals engaged in preservation and promotion of tribal folk art and culture.

In addition, Government of Orissa has also set up an Academy of Tribal Dialects and Culture, Bhubaneshwar.

(b) No, Sir.

श्री मनमोहन सामल : सर, उड़ीसा की 27 प्रतिशत जनसंख्या बनवासी है और वहां उन्नत सांस्कृतिक परम्परा भी है लेकिन इस बारे में बाहर के आदमी कम जानते हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि केन्द्र सरकार की ओर से देश और विदेश में हमारे बनवासी सांस्कृतिक फेस्टिवल, सेमिनार, ऐग्जिबिशन ऑरगेनाइज करने की कोई व्यवस्था है, उन्हें फाइनेंस करने की कोई व्यवस्था है और क्या ऐसा कोई सेमिनार बुलाने का प्रयत्न केन्द्र सरकार की ओर से हो रहा है ?

श्री जुएल उराम : सर, भारतवर्ष में 14 राज्यों में ट्राइबल रिसर्च इंस्टिट्यूट हैं, जो कि आदिवासी परम्परा, लोक कला, उनकी भाषा, संस्कृति आदि के बारे में अनुसंधान करके और

डाकुमेंटेशन करके सिनेमा केसेट के रूप में गीत वगैरह बनाकर प्रचार-प्रसार के लिए काम करते हैं। भुवनेश्वर में जो टी.आर.आई. है वह 1953-54 से काम कर रहा है। उन्होंने अभी तक करीब 12 कम्युनिटी पर रिसर्च करके किताब लिखी है और डाकुमेंटेशन तैयार किया है। हमारे देश की जो आदिवासी संस्कृति है, उसको बचाने के लिए हमारे मंत्रालय की ओर से सेंट्रली स्पॉंसर्ड प्रोग्राम में हम लोग ध्यान देते हैं और 50 : 50 के रेश्यो से, आधा हम देते हैं आधा राज्य सरकार देती हैं, उसके हिसाब से काम चलता है। भुवनेश्वर टी.आर.आई. का भी लास्ट ईयर का काम संतोषजनक है।

श्री मनमोहन सामल : सर, मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि क्या उनके मन में आता है कि भुवनेश्वर, उड़ीसा में ट्राइबल रिसर्च के लिए एक नेशनल इंस्टिट्यूट बने? मंत्री महोदय हमको हाऊस में बताएंगे और आश्वासन देंगे कि क्या उनके मन में आता है कि ऐसा कोई इंस्टिट्यूट उड़ीसा में बने?

श्री जुएल उराम : सर, अभी तक देश में 14 टी.आर.आई. हैं, जैसा मैंने बताया और इस बार मंत्रालय का दायित्व लेने के बाद सब टी.आर.आई. के डायरेक्टर्स को हमने बुलाया था यूनिफाइड काम के लिए और उनमें एक तरह से काम चले, इसके लिए विचार हो रहा है। उस बैठक में यह भी निष्कर्ष आया कि एक नेशनल इंस्टिट्यूट फार ट्राइबल रिसर्च अगर होता तो बैटर कोआर्डिनेशन हो पाता। यह सरकार के विचाराधीन है लेकिन इसके बारे में [illegible] कोई आश्वासन नहीं दे सकता कि वह कितनी जल्दी होगा, कैसे होगा। मैं इस बारे में [illegible] बोल नहीं सकता क्योंकि यह विचाराधीन है, हम लोग इस पर काम कर रहे हैं।

DR. M. N. DAS : Sir, at the outset, I should congratulate the hon. Minister for his excellent attention to preserve the tribal culture; specifically, I should congratulate him for his recent effort to establish a Department of Tribal Research and Studies in the newly-founded University of North Orissa, at Baripada, a central place for tribal culture. I was told by the Vice-Chancellor that they were going to study the origin and development of tribal alphabet, dialect, language, literature; they were also going to bring to the world notice what is tribal thought, tribal ways of living, tribal religion, faith and everything else. So, he deserves congratulation.

At the same time, Sir, mere preservation of tribal culture is not enough; it is also important to preserve some of the tribal communities which are nearing extinction. I draw your attention to a small community of tribals known as Mankadia, in Simlipal Forest. They live on monkeys and monkeys are scared away from the forests. Can you take steps to bring that community out of the forest and give them some land to settle down near the Simlipal Hills ?

Secondary, it is an all-India question. Some 70 years ago, the famous German Anthropologist, Von Hemeindorff, came to discover some tribals who still maintained the traits of the Neo-lithic age like Juangs and they are almost on the verge of extinction. Some steps should be taken to preserve those special species still maintaining the trends of Neo-lithic age. Sir, finally, I request the hon. Minister to pay his attention to a very burning issue of tribal ways of cultivation. There is something called shifting cultivation. Every year tribals clear a part of the forest and plant their crops, and next year they shift their cultivation to the next place. The shifting cultivation has caused an immense harm to the environment. It has led to deforestation. The soil of the hill comes down into the rivers and rivers change their courses, getting silted up. Therefore, something should be done to give them land outside the forests so that they can cultivate their field and maintain their livelihood.

MR. CHAIRMAN : You have put questions which do not come out of this.

SHRI KARTAR SINGH DUGGAL : Sir, while infrastructure is there, I would like to know what concrete results have been achieved in this field. There was a time when stalwarts like Verrier Elwin were there. In Orissa itself, my friend Dr. Sita Kant Mahapatra was very active. There has been absolute quiet on this front. I would like to know what is being done in this regard.

श्री जुएल उराम : सभापति महोदय, ट्राईबल कल्चर को प्रमोट करने के लिए हम लोगों ने देश के 14 स्थानों पर cultural exhibitions, Trade Fairs आर्गनाइज़ किए थे और उसमें आर्टिस्ट लोगों को भी पार्टिसिपेट कराया था। महोदय, कोचीन में 10 अप्रैल से 29 अप्रैल तक यह exhibition हुई थी, नई दिल्ली में यह सोशल डेवलपमेंट फेयर के नाम से हुई थी, Dance India - Fest India यह कोयम्बटूर में हुआ था, उसके साथ राजस्थान और गुजरात का crafts exhibition भी हुआ था। महोदय, 9, महादेव रोड में जो हमारा ट्राईबल गुड्स शॉप है, इसके माध्यम से भी हम विभिन्न राज्यों के आर्टिस्टों को बुलाते हैं और उनके क्राफ्टस और डांस का प्रदर्शन करवाते हैं। महोदय, पिछले एक साल में हमने 14 स्थानों पर इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किए हैं, बड़ौदा में भी हुआ है, ट्रेड फेयर में भी हुआ है। हम लोग इस दिशा में काफी काम कर रहे हैं। अभी केवल 2 साल ही हुए हैं इस मिनिस्ट्री को बने हुए, शायद इसी वजह से पिछले एक साल की प्रगति लाईमलाइट में नहीं आई है। मेरे ख्याल से आगे चलकर यह लाइमलाइट में आएगी।

VEN'BLE DHAMMAVIRIYO : Thank you, Mr. Chairman. Sir, through you, I would like to bring to the notice of the hon. Minister that tribal culture is very old and ancient in this country. The tribal art of this country is almost finished

now. I would like to know from the hon. Minister the steps the Government or his Department is taking to preserve the tribal paintings, culture and art. I would also like to know whether the Government of India has any proposal to set up a national institution for preserving the tribal culture of this country.

श्री जुएल उराम : सभापति महोदय, जैसा मैंने बताया है कि ट्राईबल कल्चर को प्रिजर्व करने के लिए हमारे 14 प्रदेशों में टी.आर.आई. हैं, जिन प्रदेशों में नहीं हैं, उनको हम डॉयरेक्शन दे रहे हैं कि आप भी टी.आर.आई. बनाइए। अभी हाल ही में यह डिसाइड हुआ है कि अंडमान और निकोबार में भी टी.आर.आई. बनेगा। हम उसके इन्फ्रास्ट्रक्चर के डेवलपमेंट के लिए धन देते हैं। इसके साथ-साथ वहां जो रिसर्च करनी है और उनको प्रमोट करना है, इसके लिए भी हम पैसा देते हैं। अभी तक हमारी शॉप में जो सामान है, उसका मैं थोड़ा सा ब्यौरा देना चाहता हूं—केन और बैंबू का सामान 2,91,713 रुपए का है, बस्तर जिले का ऑयरन क्रॉफ्ट का सामान 98,000 रुपए का है, मैटल क्राफ्ट 4,15,000 रुपए का है, इसके अतिरिक्त वहां गिफ्ट्स और दूसरे आईटम हैं, ट्राईबल ज्वैलरी है और ट्राईबल टैक्सटाइल सबसे ज्यादा है। ट्राईबल टैक्सटाइल्स सबसे ज्यादा 8 लाख 91 हजार का है। डेराकुटा भी है। हम इसको दिल्ली में लाकर एक्सपोजर करने के लिए बाकी देश को, दुनिया को दिखाने के लिए कोशिश करते हैं, खाली उनका क्राफ्ट आइटम नहीं दिखलाते हैं, बीच-बीच में हम आर्टिस्ट लोगों को पूरा पैसा देकर उनका जाना-आना, खाना-पीना तथा उनके जो आइटम हैं अगर अप-टू-डेट करके देने हैं उसको भी देते हैं। सर, रिसेंटली हम लोग ट्राइबल कल्चर एक्सचेंज हो उसके लिए भी हमने डिसाइड किया है और उसको हम आगे प्रमोट करने के लिए विचार कर रहे हैं।

VEN'BLE DHAMMAVIRIYO : Sir, I am asking whether there is any proposal before the Ministry for setting up an institution at the national-level.

श्री जुएल उराम : सर, नेशनल लेविल के लिए टी.आर.आई. की जो कांफ्रेंस हुई थी उसमें तय हुआ है। हम लोग उसके लिए विचार कर रहे हैं कि कैसे होगा, क्या होगा क्या उसका इम्प्लीमेंटेशन है, यह विचाराधीन है।

कुमारी फ्रिडा टोपनो : चेयरमेन सर, राउरकेला में बिसामुंडा ट्राइबल कल्चर एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट खोलने के लिए बहुत दिनों से हम लोग कोशिश कर रहे हैं और यहां भी बिसामुंडा का स्टेचू भी स्थापित हुआ है। वहां उनके नाम से कल्चर एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट खोलने के लिए हम लोग कोशिश कर रहे हैं तथा इसके लिए जमीन भी मिल जाएगी। तो क्या उसको स्थापित करने के लिए मिनिस्टर महोदय कुछ व्यवस्था कर रहे हैं ? वैसे पर्सनली तो कभी उनसे इस बारे में नहीं बोली हूं। तो क्या वह उसके लिए हम लोगों की हैल्प करेंगे ?

श्री जुएल उराम : सर, मैडम् की कंस्टीट्यूंसी मेरी भी कंस्टीट्यूंसी है और मैं जानता था कि वहां ट्राइबल कल्चर एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट बनाने के लिए वह प्रयासरत् हैं। लेकिन अभी तक

उनको जमीन नहीं मिली है। इस संस्था की वह स्वयं प्रेजीडेंट हैं और अगर उसको चलाना चाहते हैं तो मैं व्यक्तिगत रूप से उनको सहायता करने के लिए कोशिश करुंगा। लेकिन अभी तक वह शेप नहीं ले पाया है और जब वह सही शेप लेंगे तो मैं उसके लिए विचार करूंगा।

SHRI BIRABHADRA SINGH : Sir, the hon. Minister has said just now that this Department has started working recently as an independent Department. But, as we all know, this Department is not new. It had been working since there was an idea to preserve and develop the tribal art, culture and their economic condition. My supplementary is whether the hon. Minister is aware of the fact that at the national-level there is no special, definite programme for tribal culture. So many tribal languages are there. So many tribal customs and systems are there. I would like to know from the hon. Minister whether he has any definite programme to develop all the existing tribal cultures throughout the country.

श्री जुएल उराम : सर, देश में 579 ट्राइबल जो शैड्यूल में, लिस्ट में हैं, वह चिन्हित हैं। हर ट्राइबल की ऑलमोस्ट अलग से एक लेंग्युएज है, अपनी परम्परा है शादी-विवाह से लेकर बाकी सब में, तो इसको प्रिजर्व करने के लिए मिनिस्ट्री की ओर से राज्य सरकार की सहायता से कोशिश हो रही है। उसमें से बहुत सारा डाक्यूमेंटेशन हो गया है, उनके ग्रामर के बारे में, उनके लिटरेचर न होते हुए भी उनको कैसे हिन्दी में या उसकी रीजनल लेंग्युएज में वह आए उसके लिए हम प्रयासरत् हैं। जो ट्राइबल का डायलेक्ट है या उनका स्क्रिप्ट है उसको भी हम लोग प्रिजर्व करने की कोशिश कर रहे हैं। सर, पूरी डॉयवर्सिटी तो है लेकिन हम उसमें व्यस्त नहीं होते हैं, उसमें हम दुखी नहीं हैं। हम कोशिश करते हैं कि 579 टाईप का कल्चर प्रिजर्व रहे और उसके लिए डोक्यूमेंटेशन हो इसके लिए हम लोग प्रयास कर रहे हैं। इसको आज हम दो साल बाद कर रहे हैं ऐसा नहीं है। शुरु से ही कंटीन्यू है और इसको हम आगे बढ़ा रहे हैं।

SHRI S.R. BOMMAI : Sir, I would like to know from the hon. Minister what was the amount allotted last year. How much amount has been provided in the budget, this year? And how much is the increase?

श्री जुएल उराम : सर, हमारा लास्ट ईयर का बजट 70 लाख का था। इसमें से एनजीओज को 12 लाख, बाकी अन्य संस्थाओं को 65 लाख धन आबंटित किया गया था।

श्री गांधी आजाद : धन्यवाद सभापति जी। महोदय, एक कहावत है, भूखे भजन न होय गोपाला, ले लो अपनी कंठी माला। और यहां उड़ीसा की जनजाति संस्कृति का सवाल है। लेकिन संस्कृति से पहले जनजाति के लोग बचेंगे तभी तो उनकी संस्कृति का सवाल आयेगा। आज आये दिन जनजाति के लोग भूख के शिकार, नाना प्रकार से शिकार हो रहे हैं जिससे वे जतियां ही विलुप्त होती जा रही हैं। मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि जनजातियों की सुरक्षा और संरक्षा के लिए सरकार क्या कर रही है और उन पर प्रति वर्ष कितना खर्च कर रही है ?

MR. CHAIRMAN : This question does not arise out of it.